



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक भास्कर	27-2-26	1	1-4

**सिटी एंकर**

एवाएयू में अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में वैज्ञानिक बोले

# बीज गुणवत्ता सुधारने के साथ खेती में एआई और नैनो तकनीकों का उपयोग बढ़ाना होगा

भास्कर न्यूज | हिसार

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में स्पार्क परियोजना के तहत मैसी यूनिवर्सिटी, न्यूजीलैंड के सहयोग से आयोजित अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन के दूसरे दिन दुनियाभर के प्रख्यात वैज्ञानिकों ने भविष्य की खेती का रोडमैप साझा किया। सम्मेलन का विषय डेसीफरिंग दी पोटेंशियल ऑफ क्लाइमेट रेजिलियंट फंक्शनल ग्रुप फॉर सस्टेनेबल एग्रीकल्चर एंड एग्रो इंडस्ट्रीज रहा।

वैज्ञानिकों ने चेतावनी दी कि अगले 50-60 वर्षों में बढ़ती जनसंख्या के कारण कृषि क्षेत्र पर भारी दबाव होगा, जिससे निपटने के लिए बीज की गुणवत्ता और एआई और नैनो जैसी आधुनिक तकनीक ही एकमात्र रास्ता है।

### सुरक्षित बीज खेती को टिकाऊ बनाएंगे

प्रोफेसर क्रैग मैकगिल-स्कूल ऑफ एग्रीकल्चर एंड एनवायरमेंट मैसी



यूनिवर्सिटी न्यूजीलैंड ने सीड क्वालिटी ए क्रिटिकल कंपोनेंट फॉर अचिविंग

रेजिलियंट एंड सस्टेनेबल एग्रीकल्चर विषय पर व्याख्यान दिया। उन्होंने कहा कि उच्च गुणवत्ता वाले बीज ही स्थायी कृषि की नींव हैं। उन्होंने वैश्विक बीज व्यापार और अंतरराष्ट्रीय मानकों पर जोर देते हुए कहा कि जैव विविधता की सुरक्षा और सुरक्षित बीज आंदोलन ही भविष्य की खेती को टिकाऊ बनाएंगे।

### क्रिस्पर तकनीक से आएगी क्रांति : नंदन

कनाडा की यूनिवर्सिटी ऑफ ब्रिटिश, कोलंबिया से वरिष्ठ



वैज्ञानिक देवकी नंदन ने क्रिस्पर-कैस-9 एडीटिड एग्रीकल्चर पोटेंशियल टू

रिवलुशनाइज क्रॉप प्रोटेक्शन विषय पर व्याख्यान दिया। उन्होंने बताया कि क्रिस्पर-कैस-9 तकनीक पारंपरिक बीजों की तुलना में अधिक सटीक और तेज है। इससे फसलों को रोग-प्रतिरोधी बनाने, कीट नियंत्रण और पोषण बढ़ाने में मदद मिलेगी। अमेरिका से डॉ. पीटर केली ने कहा कि जलवायु-लचीली फसलों का महत्व बताया।

### नवाचार व्यापक पैमाने पर अपनाता होगा

अमेरिका के डॉ. पीटर केली ने क्लाइमेट रेजिलियंट क्रॉप,



मेजरिंग देयर कंटीब्यूशन टू सोसाइटी एंड फाइनेंसिंग देयर डेवलपमेंट विषय पर

व्याख्यान दिया। कहा जलवायु लचीली फसलों न केवल पर्यावरणीय अनिश्चितताओं का सामना करने में मदद करती हैं, बल्कि सामाजिक और आर्थिक लाभ भी देती हैं। निवेशक, सरकार और वैश्विक संस्थाओं का सहयोग इन नवाचारों को व्यापक पैमाने पर अपनाने में निर्णायक भूमिका निभाता है।



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
उमर उजाला	27-2-26	2	3-5

### एचएयू में स्पार्क परियोजना के तहत अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन, प्रो. क्रेग बोले बीज परीक्षण मानकों पर काम करना होगा

माई सिटी रिपोर्टर

हिसार। मैसी यूनिवर्सिटी न्यूजीलैंड के प्रोफेसर क्रेग मैकगिल ने कहा कि उच्च गुणवत्ता वाले बीज ही स्थायी और सतत कृषि का आधार है। अगले 50-60 वर्षों में बढ़ती जनसंख्या के चलते कृषि पर असाधारण दबाव पड़ेगा। वैश्विक बीज व्यापार और अंतरराष्ट्रीय बीज परीक्षण मानकों पर काम करना होगा। औपचारिक और अनौपचारिक बीज प्रणालियों में सुधार, जैव विविधता की सुरक्षा और सुरक्षित वैश्विक बीज आंदोलन ही भविष्य की कृषि को उत्पादक और टिकाऊ बनाएंगे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय (एचएयू) में डेसीफरिंग दी पोटेंशियल आफ क्लाइमेट रेजलियंट फंक्शनल ग्रुप फॉर सस्टेनेबल एग्रीकल्चर-एंड एग्रो इंडस्ट्रीज विषय पर स्पार्क परियोजना के आयोजित सम्मेलन के दूसरे

**अगले 50-60 वर्षों में बढ़ती  
जनसंख्या के चलते कृषि पर  
असाधारण दबाव पड़ेगा**

अंतिम दिन प्रोफेसर क्रेग मैकगिल-ने सीड क्वालिटी ए क्रिटिकल कंपोनेंट फॉर अचिविंग रेजलियंट एंड सस्टेनेबल एग्रीकल्चर विषय पर ऑनलाइन जुड़ते हुए व्याख्यान दिया।

सम्मेलन में ऑनलाइन हिस्सा लेते हुए डेनमार्क के अरहस यूनिवर्सिटी के फियोना आर. हाय ने कहा कि बीज वैश्विक कृषि और खाद्य सुरक्षा की नींव हैं। उनकी गुणवत्ता जलवायु-लचीली फसल उत्पादन के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। बढ़ते जलवायु तनाव जैसे सूखा, उच्च तापमान, क्षारीयता और रोगजनक दबावों के बीच, उच्च गुणवत्ता वाले बीज जो वीगर, आनुवंशिक स्थिरता, स्वास्थ्य और समानता प्रदर्शित करते हैं। ये उत्पादकता बनाए रखने के लिए आवश्यक हैं।

कनाडा यूनिवर्सिटी में प्रो. देवकी नंदन ने बताया कि करीसपर-कैस-9 एक पुनः प्रयुक्त बैक्टीरियल इम्यून सिस्टम, कृषि में जीनोम संपादन के लिए बेहद सटीक और तेज उपकरण है। पारंपरिक प्रजनन और आनुवंशिक संशोधन तकनीकों की तुलना में यह तकनीक उच्च सटीकता, कम ऑफ टारगेट प्रभाव और किसी भी फसल में लक्षित जीन परिवर्तन की क्षमता प्रदान करती है। करीसपर का उपयोग जलवायु-लचीली, रोग-प्रतिरोधी और उच्च उपज वाली फसलों के विकास, कीट नियंत्रण और पौधों के पोषण गुणों में सुधार के लिए किया जा सकता है।

अमेरिका से जुड़े डॉ. पीटर केली ने बताया कि जलवायु-लचीली फसलें न केवल पर्यावरणीय अनिश्चितताओं का सामना करने में मदद करती हैं, बल्कि सामाजिक और आर्थिक लाभ भी प्रदान करती हैं। इन फसलों का मूल्यांकन केवल उत्पादन और उपज तक सीमित नहीं है।



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अजीत समाचार	27-2-26	12	1-2

### हृदय में स्पर्क परियोजना के अंतर्गत अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में प्रख्यात वैज्ञानिकों ने दिए व्याख्यान

हिसार, 26 फरवरी (विरेन्द्र वर्मा): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में डेसीफरिंग दी पोटेंशियल ऑफ क्लाइमेट रेजिलियंट फंक्शनल ग्रुप फॉर सस्टेनेबल एग्रीकल्चर एंड एग्रो इंडस्ट्रीज विषय पर स्पर्क परियोजना के अंतर्गत मैसी यूनिवर्सिटी, न्यूजीलैंड के सहयोग से अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन के दूसरे दिन प्रख्यात वैज्ञानिकों के व्याख्यान निम्न प्रकार से रहे। प्रोफेसर क्रैग मैकगिल-स्कूल ऑफ एग्रीकल्चर एंड एनवायरमेंट मैसी यूनिवर्सिटी न्यूजीलैंड ने सीड क्वालिटी ए क्रिटिकल कंपोनेंट फॉर अर्चिविंग रेजिलियंट एंड सस्टेनेबल एग्रीकल्चर विषय पर व्याख्यान दिया। उन्होंने कहा कि उच्च गुणवत्ता वाले बीज ही स्थाई और सतत कृषि का आधार है। अगले 50-60 वर्षों में बढ़ती जनसंख्या के चलते कृषि पर असाधारण दबाव पड़ेगा और इसके लिए बीज की गुणवत्ता और उपयुक्त किस्मों की उपलब्धता अनिवार्य है। प्रो. मैकगिल ने वैश्विक बीज व्यापार और अंतर्राष्ट्रीय बीज परीक्षण मानकों की महत्ता पर जोर दिया। उन्होंने यह भी कहा कि औपचारिक और अनौपचारिक बीज प्रणालियों में सुधार, जैव विविधता की सुरक्षा और सुरक्षित वैश्विक बीज आंदोलन ही भविष्य की कृषि को उत्पादक और टिकाऊ बनाएंगे। फियोना आर. हाय (डिपार्टमेंट ऑफ एग्रोइकोलॉजी, अरहस यूनिवर्सिटी,

डेनमार्क) ने सीड सर्वाइवल करवज एंड लॉगेविटी पैरामीटरस विषय पर व्याख्यान दिया। कॉलिनस बी. बुर्गिगी, पीएचडी (कोरनेल एग्रीटेक, कोरलेन यूनिवर्सिटी) ने सीड बायोलोजी एंड टेक्नोलोजी: ड्राइविंग सस्टेनेबिलिटी एंड क्लाइमेट एडप्टेशन विषय पर व्याख्यान दिया। आधुनिक तकनीकें जैसे क्यूपीसीआर डिजिटल पीसीआर हाइपरस्पेक्ट्रल इमेजिंग और मेटाजेनोमिक्स बीज रोग पहचान और प्रमाणन को मजबूत करती हैं, जबकि सूक्ष्मजीव आधारित उपचार, नैनो तकनीक और डिजिटल/एआई उपकरण बीज की लंबी उम्र और तनाव सहनशीलता बढ़ाते हैं। देवकी नंदन, वरिष्ठ शोध वैज्ञानिक (यूनिवर्सिटी ऑफ ब्रिटीश, कोलंबिया, कनाडा) ने करीसपर-कैस-9 एडीटिड एग्रीकल्चर पोटेंशियल टू रिजलुशनाइज क्रॉप प्रोटेक्शन विषय पर व्याख्यान दिया। करीसपर का उपयोग जलवायु-लचीली, रोग-प्रतिरोधी और उच्च उपज वाली फसलों के विकास, कीट नियंत्रण और पौधों के पोषण गुणों में सुधार के लिए किया जा सकता है। डॉ. पीटर कैली, अमेरिका, ने क्लाइमेट रेजिलिएंट क्रॉप: मेजरिंग देयर कंट्रीब्यूशन टू सोसाइटी एंड फाइनेंसिंग देयर डेवलपमेंट विषय पर व्याख्यान दिया। उन्होंने बताया कि जलवायु-लचीली फसलें न केवल पर्यावरणीय अनिश्चितताओं का सामना करने में मदद करती हैं।



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
उज्ज्वल समाचार	27-2-26	10	1-3

### हकृवि द्वारा कपास फसल में गुलाबी सुंडी की रोकथाम पर प्रशिक्षण आयोजित

हिसार, 26 फरवरी (बिरेन्द्र वर्मा): चौधरी चरण सिंह खेती में पड़ी नरमा की लकड़ियों को झाड़कर अलग करके, हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय एवं केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर द्वारा संचालित एआई ट्रेप परियोजना के अन्तर्गत कपास फसल में कीट,



कार्यक्रम को सम्बोधित करते मुख्य वक्ता।

बीमारियों एवं गुलाबी सुंडी की रोकथाम पर एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। कृषि विज्ञान केन्द्र सदलपुर में आयोजित किए गए प्रशिक्षण में कपास अनुभाग के अध्यक्ष एवं मुख्य वक्ता के तौर पर डॉ. करमल मलिक उपस्थित रहे। डॉ. करमल ने अपने संबोधन में कहा कि किसानों को कपास फसल की उन्नत किस्मों का चयन एवं अधिक उत्पादन हेतु वैज्ञानिक तकनीकों का पालन करना चाहिए। कीट वैज्ञानिक डॉ. अनिल जाखड़ ने गुलाबी सुंडी की पहचान, जीवन चक्र एवं समन्वित कीट प्रबंधन के उपायों पर विस्तार से प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि पिछले साल की

बचे हुए टिंडों को नष्ट करने की सलाह दी। ऐसे टिंडों में गुलाबी सुंडी के लारवा पाए जाते हैं जो बोई जाने वाली नरमा फसल को नुकसान पहुंचाते हैं। पौध रोग

विशेषज्ञ डॉ. अनिल सैनी ने विभिन्न रोगों की रोकथाम संबंधी वैज्ञानिक उपायों की जानकारी दी। कोऑर्डिनेटर डॉ. नरेन्द्र ने किसानों से फसल की नियमित निगरानी, संतुलित उर्वरक उपयोग तथा फेरोमोन ट्रेप उपयोग करने की सलाह दी। वैज्ञानिकों ने नरमा की बनछटी के प्रबंधन, फेरोमोन ट्रेप के प्रयोग तथा अनुशासित कीटनाशकों के उपयोग करने का आह्वान किया। अंत में किसानों की जिज्ञासाओं का समाधान कर वैज्ञानिक खेती अपना कर उत्पादन में आय बढ़ाने का संदेश दिया गया। प्रशिक्षण में सदलपुर सहित आसपास के विभिन्न गांवों के किसानों ने भाग लिया।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,  
हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हरि भूमि	27-2-26	14	1

### गुलाबी सुंडी की रोकथाम पर प्रशिक्षण आयोजित

हिसार। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय एवं केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर द्वारा संचालित एआई ट्रेप परियोजना के अन्तर्गत कपास फसल में कीट, बीमारियों एवं गुलाबी सुंडी की रोकथाम पर एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। कृषि विज्ञान केन्द्र सदलपुर में आयोजित किए गए प्रशिक्षण में कपास अनुभाग के अध्यक्ष एवं मुख्य वक्ता के तौर पर डॉ. करमल मलिक उपस्थित रहे। डॉ. करमल ने बताया कि किसानों को कपास फसल की उन्नत किस्मों का चयन एवं अधिक उत्पादन के लिए वैज्ञानिक तकनीकों का पालन करना चाहिए।

# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सिटी प्लस न्यूज	26.02.2026	--	--

## कपास की किस्मों का चयन व अधिक उत्पादन के लिए तकनीक अपनाएं किसान : डॉ. करमल

कपास में गुलाबी सुंडी की रोकथाम पर कृषि विज्ञान केन्द्र सदलपुर में एचएयू ने किया प्रशिक्षण शिविर आयोजित

सिटी प्लस न्यूज, हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय एवं केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर द्वारा संचालित एआई ट्रेप परियोजना के अन्तर्गत कपास फसल में कीट, बीमारियों एवं गुलाबी सुंडी की रोकथाम पर एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। कृषि विज्ञान केन्द्र सदलपुर में आयोजित किए गए प्रशिक्षण में कपास अनुभाग के अध्यक्ष एवं मुख्य वक्ता के तौर पर डॉ. करमल मौलिक उपस्थित रहे।

डॉ. करमल ने कहा कि किसानों को कपास फसल की उन्नत किस्मों का चयन एवं अधिक उत्पादन के लिए वैज्ञानिक तकनीकों का पालन करना चाहिए। कीट वैज्ञानिक डॉ.



कार्यक्रम को संबोधित करते मुख्य वक्ता

अनिल जाखड़ ने गुलाबी सुंडी की पहचान, जीवन चक्र एवं समन्वित कीट प्रबंधन के उपायों पर विस्तार से

प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि पिछले साल की खेत में पड़ी नरमा की लकड़ियों को झाड़कर अलग

करके, बचे हुए टिंडों को नष्ट करने की सलाह दी। ऐसे टिंडों में गुलाबी सुंडी के तारवा पाए जाते हैं जो बोई

जाने वाली नरमा फसल को नुकसान पहुंचाते हैं।

पौध रोग विशेषज्ञ डॉ. अनिल सेनी ने विभिन्न रोगों की रोकथाम संबंधी वैज्ञानिक उपायों की जानकारी दी। कोऑर्डिनेटर डॉ. नरेन्द्र ने किसानों से फसल की नियमित निगरानी, संतुलित उर्वरक उपयोग तथा फेरोमोन ट्रेप उपयोग करने की सलाह दी। वैज्ञानिकों ने नरमा की बनछटी के प्रबंधन, फेरोमोन ट्रेप के प्रयोग तथा अनुशंसित कीटनाशकों के उपयोग करने का आह्वान किया। अंत में किसानों की जिज्ञासाओं का समाधान कर वैज्ञानिक खेती अपना कर उत्पादन में आय बढ़ाने का संदेश दिया गया। प्रशिक्षण में सदलपुर व आसपास के किसानों ने भाग लिया।

# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दक्ष दर्पण न्यूज	26.02.2026	--	--

## हफ़्टि द्वारा कपास फसल में गुलाबी सुंडी की रोकथाम पर प्रशिक्षण कार्यक्रम में किसान हुए शामिल

दक्ष दर्पण

हिसार : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय एवं केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर द्वारा संचालित एआई ट्रेप परियोजना के अन्तर्गत कपास फसल में कीट, बीमारियों एवं गुलाबी सुंडी की रोकथाम पर एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। कृषि विज्ञान केन्द्र सदलपुर में आयोजित प्रशिक्षण में कपास अनुभाग के अध्यक्ष एवं मुख्य वक्ता के तौर पर डॉ. करमल मलिक उपस्थित रहे। डॉ. करमल ने अपने संबोधन में कहा कि किसानों को कपास की उन्नत किस्मों का चयन एवं अधिक उत्पादन हेतु वैज्ञानिक तकनीकों का पालन करना चाहिए। कीट वैज्ञानिक डॉ. अनिल जाखड़ ने गुलाबी सुंडी की पहचान, जीवन चक्र एवं समन्वित कीट प्रबंधन के उपायों पर विस्तार से प्रकाश



डाला। उन्होंने पिछले साल की खेती में पड़ी नरमा की लकड़ियों को झाड़कर अलग करके, बचे हुए टिंडों को नष्ट करने की सलाह दी। ऐसे टिंडों में गुलाबी सुंडी के लारवा पाए जाते हैं जो बोई जाने वाली नरमा फसल को नुकसान पहुंचाते हैं। पौध रोग विशेषज्ञ डॉ. अनिल सैनी ने विभिन्न रोगों की रोकथाम संबंधी वैज्ञानिक उपायों की जानकारी दी। कोऑर्डिनेटर डॉ. नरेन्द्र ने किसानों से फसल की नियमित निगरानी, संतुलित

उर्वरक उपयोग तथा फेरोमोन ट्रेप उपयोग करने की सलाह दी। वैज्ञानिकों ने नरमा की बनछटी के प्रबंधन, फेरोमोन ट्रेप के प्रयोग तथा अनुशासित कीटनाशकों के उपयोग करने का आह्वान किया। अंत में किसानों की जिज्ञासाओं का समाधान कर वैज्ञानिक खेती अपना कर उत्पादन में आय बढ़ाने का संदेश दिया गया। प्रशिक्षण में सदलपुर सहित आसपास के विभिन्न गांवों के किसानों ने भाग लिया।